موضوع الخطبة : خصائص الشريعة الإسلامي – جزء 8

الخطيب : فضيلة الشيخ ماجد بن سليمان الرسي/ حفظه الله

لغة الترجمة : الأردو

المترجم :سيف الرحمن التيمي(@Ghiras_4T)

शीर्षक:

इस्लामी शरीअ़त की उत्कृष्ट विशेषताएं–किस्त8

إنَّ الْحَمْدَ لِلَّهِ، نَحْمَدُهُ وَنَسْتَعِينُهُ وَنَسْتَغْفِرُهُ، وَنَعُوذُ بِاللَّهِ مِنْ شُرُورِ أَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ أَعْمَالِنَا، مَنْ يَهْدِهِ اللَّهُ فَلَا مُضِلَّ لَهُ، وَمَنْ يُضْلِلْ فَلَا هَادِيَ لَهُ، وَأَشْهَدُ أَنْ لَا إله إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ، وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ.

(يَا أَيُّهَا الذين آمَنُواْ اتَّقُواْ اللّهَ حَقَّ تُقَاتِهِ وَلاَ تَمُوتُنَّ إِلاَّ وَأَنتُم مسْلِمُون).

(يَا أَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُواْ رَبَّكُمُ الَّذِي خَلَقَكُم مِّن نَّفْسٍ وَاحِدَةٍ وَخَلَقَ مِنْهَا زَوْجَهَا وَبَثَّ مِنْهُمَا رِجَالاً كَثِيراً وَنِسَاء وَاتَّقُواْ اللّهَ الَّذِي تَسَاءلُونَ بِهِ وَالأَرْحَامَ إِنَّ اللّهَ كَانَ عَلَيْكُمْ رَقِيبا).

(يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَقُولُوا قَوْلاً سَدِيداً * يُصْلِحْ لَكُمْ أَعْمَالَكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوبَكُمْ وَمَن يُطِعْ اللَّهَ وَرَسُولَهُ فَقَدْ فَازَ فَوْزاً عَظِيما)

प्रशंषाओं के पश्चात!

सबसे सत्य बात अल्लाह की पुस्तक है,स्वोत्तम मार्ग मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का मार्ग है,दुष्टतम चीच(धर्म में)अविश्कार किए हुए नवाचार हैं,(धर्म

में)अविश्कार की गइ प्रत्येक नई चीज़ बिदअ़त(नवाचार)है,प्रत्येक नवाचार गुमराही है और प्रत्येक गुमराही नरक में ले जाने वाली है।[1]

अल्लाह के बंदो!अल्लाह तआ़ला से डरो और उसका सम्मान करो,उसकी आज्ञाकारी करो और उसकी अवज्ञा से बचो,पुण्य के कार्य करने और पाप के कार्यों से दूर रहने में धैर्य से काम लो और जान लो कि अल्लाह तआ़ला ने एक महान **उद्देश्य** की खातिर शरीअ़तों का निर्माण किया,वह यह कि लोगों को दीन व दुनिया के कलयाण का मार्गदर्शन किया जाए,क्योंकि मानव बुद्धि स्वय ऐसे नियमों एवं विनियमों का निर्माण नहीं कर सकती जो लोगों को सीधे मार्ग के मार्गदर्शन कर सकें,बल्कि यह उस अल्लाह की विशेषताओं में से है जो अपनी विशेषताओं में पूर्ण,अपने कार्यों एवं कथनों और तक़दीर में हकीम,अपने मख़्लूक़ों की नीतियों से अवगत और उन पर दयालु व कृपालु है,जबकि मनुष्य का ज्ञान अति अधूरा है।

हे मोमिनो!पूर्व उपदेशों में हम ने इस्लामी शरीअ़त के लगभग चालीस विशेंषताओं पर चर्चा किया था और आज उसी श्रृंख्ला को आगे बढ़ाते हैं:

39.इस्लामी शिक्षाओं की एक विशेषता यह है कि हर वह कथन जो इसके विरुद्ध है,वह असत्य है,जो प्रतिस्पर्धा के समय सत्य के सामने टिक नहीं सकता,अल्लाह तआ़ला का फरमान है: (وقل جاء الحق وزهق الباطل إن الباطل كان زهوقا)

अर्थात:तथा कहिये कि सत्य आ गया,और असत्य ध्वस्त निरस्त हो गया,वास्तव में असत्य को ध्वस्व निरस्त होना ही है।

अल्लाह ने अधिक फरमाया: (قل جاء الحق وما يُبدئ الباطل وما يعيد)

---

[1]मैंने इस निबन्ध में मूल रूप से शैख उ़मर बिन सोलेमान अलअशक़र की पुस्तक"مقاصد الشريعة الإسلامية"पर विश्वास किया है,फिर उस में अल्लाह की तौफीक़ और आसानी से कुछ वृद्धि भी किए हैं।

अर्थातःआप कह दें कि सत्य आ गया।और असत्य न (कुछ का)आरंभ कर सकता है और न (उसे)पुनः ला सकता है।

अर्थात उसका मामला म्लान हो जाएगा और उसकी महिमा एवं गौरव जाती रहेगी,अतः वह न पहले कुछ कर सका और न कर सकेगा।[2]

40.इस्लामी शरीअ़त की एक विशेषता यह है कि वह समस्त चुनौतियों के समक्ष स्थिर,चल रहे और स्थायी है, **यद्यपि** उस पर स्वेद आक्रमण क्यों न हों,और हर काल में शत्रु इससे युद्ध करते ही क्यों ने रहें,इस्लामी शरीअ़त में न अपक्षय आया और न वह परिवर्तन आती रहती है और वह स्थायी विनाश की ओर बढ़ रहे हैं।

एतिहासिक रूप से इस्लामी शरीअ़त की स्थिरता का एक दृश्य यह है कि वह वैचारिक विचलनों के सामने दृढ़ रहा है,उदाहरण स्वरूप ईसाइयत का लहर,जिसका **उद्देश्य** पूरे संसार को ईसाई बनाना और उन्हें सलीब की प्रार्थाना पर उभारना है,इस प्रकार ईसाइयत को बढ़ावा देने वाले देशों के पास अधिक संभावनाएं हैं,किन्तु उनके यहां इस्लाम में प्रवेश होने वालों का अनुपात,ईसाइयत और अन्य विकृतिय धर्मों और मानव धर्मों को स्वीकार करने वालों से अति अधिक है।

इतिहास में इस्लामी शरीअ़त के स्थायित्व का एक दृश्य यह भी है कि वह धर्मनिरपेक्षता की लहर के समक्ष दृढ़ संकल्प रही,जिसका **उद्देश्य** जीवन के समस्त

[2] यह इब्ने सादी रह़ीमहुल्लाहु का कथन है जो उन्हों ने उपरोक्त आयत की व्याख्या में लिखा है।

विभागों से धर्म को निकाल के केवल बंदा का अपने रब से संबंध तक उसे सीमित रखना है।

इतिहास में इस्लामी शरीअ़त के स्थिरता का एक दृश्य यह भी है कि हिंसा एवं अव्यवस्था जैसी लहरों के सामने पहाड़ बन कर खड़ी रही,जिन का **उद्देश्य** चंद

इस्लामी देशों के शासकों को अपदस्थ करना था,ताकि उन लहरों के मानने वाले वहां के शासन पर कब्जा जमा सकें,और अपने अनुमान के अनुसार उन देशों को शांतिपूर्ण और खुशहाल देशों में बदल सकें,दुनिया ने यह देखा कि जिन देशों में उन्हों ने अपनी योजनाएं लागू किये,वहां उन निराधार लहरों के ये प्रभाव प्रकट हुए कि स्थिति बुरा से अति बुरा हो गया,अवैध चीजों को वैध कर दिया गया,रक्त का दरिया बहाया गया,सम्मान एवं गरिमा नीलाम हुई और काफिर मुसलमानों की इस स्थिति को देख कर प्रसन्न हए और उसको"वसंत"का नाम दिया।

41.इस्लामी शरीअ़त को एक विशेषता यह भी है कि जो भी उससे शत्रुता मोल लेता है वह अंततः हार व रुसवाई से दोचार होता है,चाहे वह सक्ताधारी लोग हों,अथवा पद धारक लोग,अथवा वैचारिक विचलनों एवं **कट्टरपंथी**,साम्यवाद का अंजाम किया

हुआ?कौ़मियत व बेसत कहां गई?ये सारी लहरें हवा हो गईं,इसके विपरीत,**14** शताब्दियों पर सम्मिलित चुनौतियों के बावजूद क्या इस्लाम मिट पाया?धर्मयुद्ध के प्रभाव से इस्लाम पर कोई आंच आया?और किया यूरोपीय साम्राज्यवाद के प्रभाव में इस्लाम बेनिशान होगया?क्या इराक़ पर तातारी आकमणों ने इस्लाम को मिटा

दिया?अह़वाज़ और इराक़ पर राफज़ी आक्रमण से इस्लाम खत्म हो गया?धर्मनिरपेक्षता के वैचारिक आकर्मण से प्रभावित हो कर इस्लाम का अस्तित्व समाप्त हो गया?नहीं,अल्लाह की क़सम!इसकी स्थिरता और बढ़ गई।अल्लाह ने सत्य फरमायाः (وقل جاء الحق وزهق الباطل إن الباطل كان زهوقا)

अर्थातःतथा कहिये कि सत्य आ गया,और असत्य ध्वस्त निरस्त हो गया,वास्तव में असत्य को ध्वस्त निरस्त होना ही है।

उपरोक्त प्रस्तावना के पश्चात आप जान लें कि शरीअ़तों **उद्देश्यों** को समझने के लिये एक उपयोगी प्रस्तावना है,जो व्यक्ति इस प्रस्तावना को समझले,उसके लिये अल्लाह की नीति को समझना आसान हो जाएगा जिसके **मद्देनजर** अल्लाह ने शरीअ़तें नाज़िल फरमाई।

- अल्लाह तआ़ला मुझे और आप को कुरान की बरकतों से माला माल फरमाए,मुझे और आप को उसकी आयतों और नीतियों पर आधारित प्रामर्श से लाभ पहुंचाए,मैं अपनी यह बात कहते हुए अल्लाह से अपने लिये और आप सब के लिये क्षमा प्राप्त करता हूं,आप भी उससे क्षमा प्राप्त करें,निसंदेह वह अति क्षमा प्रदान करने वाला और बड़ कृपालु है।

द्वितीय उपदेशः

الحمد لله وحده، والصلاة والسلام على من لا نبي بعده

प्रशंषाओं के पश्चात!

42. इस्लामी शरीअ़त की एक विशेषता यह भी है कि इस्लामी शरीअ़त की एक विशेषता यह है कि जो देश और समुदायें उसे लागू करें,उनसे अल्लाह ने दुनिया व आखिरत के सौभाग्य का वादा फरमाया है,ताकि वह दुनिया में शांति और सम्मान के

साथ खुशहाल जीवन गुजारें और आखिरत में उनके लिये बड़े बदले व पुण्य का वादा है।किन्तु जो देश और क़ौमें अल्लाह की शरीअ़त से मुंह मोड़ेंगी वह कठिनाई व नष्ट से दो चार होंगी,चाहे सबसे शक्तिशाली एवं सबसे विद्रोही देशों में से ही क्यों न हों।वास्तविक्ता इस की गवाह भी है,जब पहले के लागों ने इस सत्य को समझा और शरीअ़त को लागू किया तो आठ शताब्दियों तक धर्ती पर इस्लामी संस्कृति का बोल बाला रहा और उन्हें अल्लाह तआ़ला की यह खुशखबरी मीलीः

(وعد الله الذين آمنوا منكم وعملوا الصالحات **ليستخلفنهم** في الأرض كما استخلف الذين من قبلهم

وليمكنن لهم دينهم الذي ارتضى لهم وليبدلنهم **من بعد خوفهم أمنا** يعبدونني لا يشركون بي شيئا

अर्थातः अल्लाह ने वचन दिया है उन्हें जो तुम में से ईमान लायें तथा सुकर्म करें कि उन्हें अवश्य धरती में अधिकार प्रदान करेगा जैसे उन्हें अधिकार प्रदान किया जो इन से पहले थे,तथा अवश्य सुदृढ़ कर देगा उन के उस धर्म को जिसे उन के लिये पसॅद किया है,तथा उन (की दशा)को उन के भय के पश्चात शान्ति में बदल देगा,वह मेरी इबादत(वंदना)करते रहें और किसी चीज़ को मेरा साझी न बनायें।

किन्तु जब उन्हों ने अल्लाह के दीन से मुंह मोड़ा तो अल्लाह ने उन से नेतृत्व छीन ली और उन पर शत्रुओं को अधिरोपित कर दिया,जैसा कि आज हम इस को देख रहें हैं।

- इस्लामी शरीअ़त की य चालीस **अद्भुत** विशेषताएं हैं,जो व्यक्ति इन्हें जान ले और समझ ले वह इस्लामी शरीअ़त में छुपा अल्लाह की नीति से भी अवज्ञत हो जाए गा और हमारे जमाने के मोनाफिक़ों(पाखंडी)अर्थात नास्तिकों की गुमराही भी उस पर स्पष्ट हो जाएगी जो इस्लाम और उसके आदेशों का कोसते हैं और यह दावा करते हैं कि वह एक पिछड़ा और रूढ़िवादी धर्म है। अल्लाह तआ़ला हमें उनके संदेहों से सुरक्षित रखे।

- प्रिय पाठक!जो व्यक्ति इन विशेषताओं से अवगत हो,वह आसानी से यह समझ सकता है कि तेजी से लोगों के इस्लाम में प्रवेश करने के पीछे किया भेद छिपा है,विशेष रूप से उन देशों में जो भौतिक रूप से विकसित हैं और नये नये आविष्कारों एवं खोजों में पसिद्ध है,अल्लाह ने सत्य फरमायाः

(سنريهم آياتنا في الآفاق وفي أنفسهم **حتى يتبين لهم أنه الحق**أَوَلَمْ يَكْفِ بِرَبِّكَ أَنَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ شهيد)

अर्थातःहम शीघ्र ही दिखा देंगे उन को अपनी निशानियाँ संसार के किनारों में तथा स्वयं उन के भीतर।यहाँ तक कि खुल जायेगी उन के लिये यह बात कि यही सच्च है।और किया यह बात पर्याप्त नहीं कि आप का पालनहार ही प्रत्येक वस्तु का साक्षी है।

आप यह भी याद रखें–अल्लाह आप पर कृपा करे–कि अल्लाह ने आप को एक बड़े कार्य का आदेश दिया है,अल्लाह का कथन है:

(إِنَّ اللَّهَ وَمَلَائِكَتَهُ يُصَلُّونَ عَلَى النَّبِيِّ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا صَلُّوا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوا تَسْلِيمًا)

अर्थातःअल्लाह तआ़ला तथा उसके फरिशते दरूद भेजते हैं नबी पर।उन पर दरूद तथा बहुत सलाम भेजो।

- हे अल्लाह!हम तुझ से स्वर्ग मांगते हैं और वह कथन एवं कार्य भी जो स्वर्ग से निकट करदे,और हम तेरा शरण चाहते हैं नरक से और उस कार्य एवं कथन से जो नरक से निकट करदे।
- हे अल्लाह!हमं अपना प्रेम और हर उस कार्य का प्रेम प्रदान फरमा जो तुझ से निकट करदे।
- हे अल्लाह!हम ने अपना बड़ा घाटा कर लिया और यदि तू हमे क्षमा नहीं प्रदान करेगा और हम पर कृपा न करेगा तो निसंदेह हम हानि उठाने वालों में से हो जाएंगे।
- हे अल्लाह!हमारे समस्त पापों की क्षमा फरमा,छोटे हों अथवा बड़े,पूर्व के हों अथवा पश्चात के,आंतरिक हों अथवा **बाह्य**।
- हे हमारे रब!हमें दुनिया में नेकी प्रदान कर और आखिरत में भी भलाई प्रदान कर और हमें नरक की यातना से मुक्ति प्रदान फरमा।

سبحان ربك رب العزة عما يصفون وسلام على المرسلين والحمد لله رب العالمين.اللهم صل وسلم على نبينا محمد وعلى آله وصحبه

लेखकः

मजिद बिन सोलेमान अर्रसी

अनुवादकः

फैज़ुर रह़मान ह़िफजुर रह़मान तैमी